Krishnagar Academy
Subject – 2nd Lang. Hindi
class – VIII

वक्त की सूझ

सारांश – हरखू नाम का तेरह – चौदह वर्ष का एक बालक जो अपने पिता की मृत्यु के उपरांत अपने परिवार का दायित्व अपने कंधे पर उठा लिया था। वह अपने पिता के ही तरह इटारसी जबलपुर के बीच की लाइन पर रेल में चने बेचा करता था। वह तीखी सुरीली आवाज में कहता 'ले लो चने कुरमुरे मसालेदार.... जो भी खाए, माँगे बार बार....' इस तरह अपने चनों का गुनगान करता। कहीं – कहीं कोई मुसाफिर उसे रोककर चने माँगता तो वह तत्परता से एक चौकोर कागज में चने डालता, चटपटे मसाले छिड़कता और ऊपर से नीबू की आठ – दस बूँदे टपका देता।

जब वह सुबह जबलपुर से इटारसी की गाड़ी में चलता तो एक सी वर्दी पहने, बस्ता टाँगे बच्चे स्कूल जाते नजर आते। हरखू को बड़ा भला लगता। एक दिन पिता के जीवित रहते वह भी स्कूल जाया करता था लेकिन पिता की मृत्यु के बाद अब वह पिता की जिम्मेदारी स्वयं अपने कंधे पर ले लिया था और अपने छोटे भाई को पढ़ने स्कूल भेजा करता था।

एक दिन वापसी की यात्रा के दौरान एक बोगी में चढ़ा और अंदर घुसते ही अपनी सुरीली आवाज में चने बेचना शुरू किया कि एक मोटे सेठ ने उसे

देख कहने लगा. जाने कहाँ - कहाँ से भिखारी घुस आते हैं। हरखू यह सुनकर कहने लगा कि वह भिखारी नहीं बल्कि वह तो चने बेचने वाला है। यह कहकर वह जैसे ही बाहर निकलने को हुआ कि दरवाजे पर एक लंबे - तगड़े मुच्छैल आदमी को पिस्तौल हाथ में लिए देखकर चौंक पड़ा। वह आदमी डिब्बे में घुसकर सवारियों पर पिस्तौल तानकर उनसे कड़े स्वर में कहने लगा कि उनके पास जो कुछ भी जेवर - नकदी है निकालकर उसे दे दे और हिलने की भी कोशिश की तो उनका भेजा उड़ा कर रख देगा। सभी सकते में / डर गए आ गए। सेठ से उसकी ब्रीफकेस माँगने लगा और सेठानी से उनके जेवर। बदमाश की धमकी से सेठ के माथे से पसीना चुहचुहा आया। हरखू का दिमाग तभी बिजली की एक तरह तेजी से चला और उसने मौका देखकर चाट मसाले का डिब्बा बदमाश की आँख की ओर उछाल दिया। अब वह आँख मलता हुआ दर्द से बेहाल था तभी बाकि सवारियों में से उसे बाँध दिया और एक मुसाफिर रेलवे पुलिस को बुलाने चला गया। सभी लोग हरखू की सूझ - बूझ और बहादुरी की प्रशंसा करने लगे। सेठ भी हरखू के सिर पर प्यार से हाथ फेर कर बोला कि आज यदि हरखू नहीं होता तो वह लुट गया होता। पुलिस इंस्पेक्टर ने भी पुलिस की ओर से उसे पुरस्कार दिलवाने को कहा। सेठ उसे सौ रुपया देना चाहा तो हरखू ने कहा कि वो भिखारी नहीं है और उसने ये सारा पैसों के लिये नहीं किया। जब सेठ को हरखू के जीवन की सारी सच्चाई उसके कहने पर पता चला तो उसने उसे अपने स्कूल में दाखिला करने का वादा किया मुफ्त में वह वहाँ पढ़ - लिख पायेगा तथा उसे अपने दुकान में जिल्द बाँधने का काम भी दिलवाया।